

करुणामई श्री राधिके अब आ गया तुम्हरी शरण

करुणामई श्री राधिके अब आ गया तुम्हरी शरण,
जैसा भी हूँ तेरा ही हूँ जाऊँ कहां तजि के चरण,

असार इस संसार में भटका रहा रागी ये मन,
जबसे मिला मुझे वृंदावन भटकन मिटी पाया अमन,

तेरे दर की क्या महिमा कहूँ रहते जहां नित रसिक जन,
यहां प्रेम बरसै रात दिन होता जन जीवन मगन,

तेरी युगल छवि दिल में बसे "वैष्णव" जन करते वंदना,
जाऊँ मैं जब संसार से तेरे सामने हो मेरा मरण,

करुणामई श्री राधिके लो आ गया तुम्हरी शरण,
जैसा भी हूँ तेरा ही हूँ जाऊँ कहां तजि के चरण,

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/12797/title/karunamayi-shri-radhike-ab-aa-gya-tmhari-sharan>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |